केवल अनुपस्थित परीक्षार्थीओं के लिए : केवल 'बारकोड' अंकित यही एकमात्र पृष्ठ नीचे दी गई रेखा से काटकर पत्रक – A तथा पत्रक – B के साथ वापस भेजना है ।

इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक ३ मार्च, २०१३ को होनेवाली मुख्य परीक्षा में भी पूछे जाने की संभावना है ।

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

सत्संग शिक्षण परीक्षा

पूर्व कसौटी : सत्संग प्रवेश : प्रश्नपत्र – १

जनवरी, २०१३ समय : सुबह ९.०० से ११.१५ कुल गुणांक : ७५

स्वामिनारायण
BAPS

अनुपस्थित परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका का केवल यही पृष्ठ वापस भेजना है ।

परीक्षार्थी के नाम सम्बंधित विवरण के साथ 'बारकोड' अंकित किया गया है । कृपया उस पर किसी प्रकार का नुक़सान मत कीजिए ।

अनिवार्य : निम्न लिखित सूचना की परीक्षार्थी को अपने आप पूर्ति करनी है

परीक्षार्थी का जन्म दिन: दिनांक □□ महीना □□ वर्ष □□□□

परीक्षार्थी का अभ्यास ....

परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका पर अंकित नाम सहित अनिवार्य विवरण की सत्यता की जाँच करने के पश्चात् वर्ग निरीक्षक हस्ताक्षर करें ।

वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर ....

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	१ (९)	
	२ (६)	
	३ (५)	
	४ (५)	
	५ (४)	
	६ (४)	
विभाग–१, कुल गुण (३३)		

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	७ (९)	
	८ (४)	
	९ (५)	
	१० (४)	
	११ (६)	
	१२ (४)	
विभाग–२, कुल गुण (३२)		

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
विभाग–३, कुल गुण		
	१३ (१०)	

परीक्षक के हस्ताक्षर

....

मोडरेशन विभाग माटे ज

ગુણ શબ્દોમાં . . . .

ચેકર – નામ

परीक्षार्थीओं को महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ :–

१. मुख्य परीक्षा के दिन वर्गखंड में उपस्थित प्रत्येक परीक्षार्थी वर्ग निरीक्षक से अपनी नामयुक्त उत्तर पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर करा लें ।

२. **बिना वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर की उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।**

३. दायीं ओर दिए गए अंक प्रश्न के गुण दर्शाते हैं ।

४. सूचनानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । अस्पष्ट उत्तर अमान्य होंगे ।

५. मुख्य परीक्षा में उत्तरवही के ईलावा अतिरिक्त पनों में लिखे हुए उत्तर मान्य नहि होंगे ।

६. **परीक्षार्थी केवल ब्लू या केवल काली स्याही वाली पेन से ही उत्तर पुस्तिका में उत्तर लिखे । पेन्सिल से अथवा लाल, हरी या अन्य स्याही से लिखे गए उत्तर या एक से ज्यादा स्याही से लिखि गई उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।**

७. परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व मंजूरी बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'लेखाकार' या 'डमी राईटर' एवं 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तरवही रद गीनी जाएगी । एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावट रद मानी जाएगी ।

८. **परीक्षा खंड के बाहर** और अन्य सभी परीक्षार्थीओं से अलग या परीक्षा के नियमों का उल्लंघन कर के दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी ।

विभाग - १ : नीलकंठ चरित्र - तृतीय संस्करण, नवम्बर - २०११

प्र. १ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । **(९)**

१. ''आज मुझे महादीक्षा दीजिए ।''

कौन कहता है ? .... किसको कहता है ? ....

कब कहता है ? ....

....

....

२. ''तीनों की सेवा स्वीकार करूँगा ।''

३. ''यदि ऐसा विचार किया होता कि, संध्या या प्रभात में क्या खायेंगे ? तो घर का त्याग क्यों करता ?''

प्र. २ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) **(६)**

१. जगन्नाथपुरी के राजा ने नीलकंठवर्णी का गुरू के रूप में स्वीकार किया ।

....

....

....

....

२. पुलहाश्रम की ओर चलते समय नीलकंठवर्णी शरीर लड़खड़ाते हुए नदी के तट तक पहुँचे ।

३. लोज आश्रम में सभी के अंतर्मन में प्रतीति हुई की नीलकंठवर्णी स्वयं पुरुषोत्तम नारायण हैं ।

प्र. ३ निम्नलिखित किन्हीं एक प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टूंकनोंध लिखिए । (वर्णनात्मक) **(५)**

१. रामानंद स्वामी को पत्र लिखा २. मानसपुर में असुरों का नाश

३. वेणीराम को दर्शन दिया और रघुनंदन को जीवन!

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

प्र. ४ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । **(५)**

१. काठमांडू में साधु-सन्तों का आगमन क्यों बंद हो गया था ?

....

....

२. कांचीपुरम् के रास्ते में नीलकंठवर्णी को कौन मिला ?

३. राजा रणजितसिंह को नीलकंठवर्णी का पुन:दर्शन कहाँ हुआ ?

४. शेखपाट में कौन रहते थे ?

५. नीलकंठवर्णी तीर्थों, आश्रमों तथा विभिन्न संप्रदायों में किस विषय पर प्रश्न पूछते थे ?

प्र. ५ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । **(४)**

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहीं दिया जाएगा ।

१. वनविचरण के समय नीलकंठवर्णी को कौन कौन से राजाओं का मिलाप हुआ ?

(१) ☐ सिद्धवल्लभ (२) ☐ पृथ्वीनारायण (३) ☐ प्रेमदत्त (४) ☐ देवदत्त

२. भगवानदास ने नीलकंठवर्णी के बायें पैर में कौन से चिन्हों को देखा ?

(१) ☐ त्रिकोण (२) ☐ अष्टकोण

(३) ☐ अंकुश (४) ☐ धनुष्य

प्र. ६ निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए । **(४)**

१. राजा महादत्त की बहन का नाम .... था ।

२. बदरीवन में .... ऋषि का आश्रम है ।

३. लोज में गोबर उठाने जानेवाली स्त्रियों को गोबर में .... का नज़ारा दिखाई देता था ।

४. जयरामदास नीलकंठवर्णी के लिए प्रतिदिन .... लाता था ।

विभाग - २ : सत्संग वाचनमाला भाग- १ - प्रथम संस्करण, जून - १९९७

प्र. ७ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । **(९)**

१. ''साथ में भगतजी महाराज एवं विचरण करते हुए प्रकट स्वरूप स्वामीश्री शास्त्रीजी महाराज-इनकी महिमा का प्रसार करने से भी महाराज और स्वामी को प्रसन्नता होगी ।''

कौन कहता है ? .... किसको कहता है ? ....

कब कहता है ? ....

....

....

२. ''मैं कल धाम में जानेवाला हूँ ।''

३. ''पाटीदार-पटेल के आँगन में एक साधु आया है ।''

प्र. ८ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) **(४)**

१. लाडुदानजी के कंठ के द्वारा कविता बाहर सरकने लगी 'धन्य आजनी घडी रे ....'

....

....

....

....

२. जीवुबा को ससुराल से अपने यहाँ लौटी हुई देखकर भी एभल खाचर शांत रहे ।

प्र.९ 'अष्ट कवियों की मंडली में देवानंद स्वामी' – **प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टिप्पणी लिखिए । (वर्णनात्मक)** **(५)**

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

प्र.१० निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । **(४)**

१. शुकमुनि ने कब और कहाँ शरीर छोड़ा ?

....

....

२. माणकी घोड़ी देखकर जोबन का मन क्यों ललचाया ?

३. जीवुबा ने लाडु बारोट को कोन सा धर्म समझाकर शरीर को कैसा बताया ?

४. शास्त्रीजी महाराज के सत्संग से आशाभाई कौन सा रहस्य समझ गये ?

प्र.११ निम्नलिखित विषय के लिए सूचनानुसार छः सही क्रमांक और उस सही क्रमांक को घटनाक्रम के अनुसार लिखिए । **(६)**

विषय : दरबार श्री झीणाभाई ।

१. यह खुदा का सच्चा आशिक जीव है । **२.** जगत के जीव नाचगान और सुरापान की महफिल में मशगूल थे । **३.** साक्षात् पुरुषोत्तमनारायण सुख दें और कोई उससे तृप्त हो यह कैसे हो सकता है ? **४.** उनकी माताजी जशुबा एवं बहन अदीबा महाराज के परम भक्त बन गये थे । **५.** इसके बराबरी का कोई साधु नहीं है और मेरे बराबर दूसरा कोई भगवान नहीं है । **६.** मुक्तानंद स्वामी नीलकंठवर्णी के साथ पंचाला गाँव में पधारे थे । **७.** बढ़िया माने गये पाँचों विषयों को वे बिलकुल घटिया मानते थे । **८.** स्वामी भक्तवत्सल हैं, जीवात्मा के दोषों की ओर वे द्रष्टि नहीं करते । **९.** सूरा खाचर आदि भक्तों के समझाने पर महाराज की उदासीनता तो किसी तरह टल गई । **१०.** रुठकर सेवा करना अच्छा नहीं । **११.** वह अपना सिर छिपाकर आँखें नीचे झुकाकर बैठा था । **१२.** महाराज ने संतों को कुमकुम एवं तिलक धारण करवाया ।

(१) केवल सही क्रमांक :						
(२) यथार्थ घटनाक्रम :						

सूचना : (१) केवल सही क्रमांक के सभी छः उत्तर क्रमांक सही होंगे तो ही ३ गुण प्राप्त होंगे ।(२) यथार्थ घटनाक्रम भी सही होगा तो ही ३ गुण प्राप्त होंगे, अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

प्र.१२ निम्नलिखित गलत वाक्य को उसके विषय के अनुलक्ष्य में सही लिखिए । **(४)**

सूचना :- संपूर्ण वाक्य सही लिखा होगा तो ही गुण प्राप्त होंगे । अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

उदाहरण : स्वामी यज्ञप्रियदासजी : मोतीभाई के पुत्र जेठाभाई, खेत में घुमते समय बिच्छु के काटने से धाम में गए । बाद में श्रीजीमहाराज के साथ आकर मोतीभाई को नारायण कहा ।

उत्तर : स्वामी यज्ञप्रियदासजी : आशाभाई के पुत्र **देसाईभाई चारागाह** में **काम** करते समय **सर्पदंश** होने से धाम पधारे । बाद में **भगतजी महाराज** के साथ आकर **आशाभाई** को **जय स्वामिनारायण** बोला ।

१. **भक्तराज जीवुबा :** यकायक कमरा सुवास से भर गया । भगवान चतुर्भुज रुप धारण कर मूर्ति में से प्रकट हुए और मीठाई आरोगने लगे ।

उ. ....

....

२. **सद्‌गुरु देवानन्द स्वामी :** साक्षात् भगवान् लक्ष्मीनारायण तुम्हारे गाँव में पधारेंगे, अलौकिक आश्चर्य बताएँगे, तुम उनकी शरण में जाना, लक्ष्मी स्वयं तुम्हारी जीभ पर बिराजेगी ।

३. **स्वामी निर्गुणदासजी :** बड़ोदरा, गोंडल, गढ़डा आदि मंदिरों में उन्होंने कोठारी के रुप में काम किया ।

४. **स्वामी यज्ञप्रियदासजी :** मोटा स्वामी ने शास्त्रीजी महाराज के अमृतमहोत्सव, योगीजी महाराज के शताब्दी महोत्सव जैसे ऐतिहासिक उत्सवों में सबको दर्शन दिये ।

विभाग - ३ : निबंध

प्र.१३ निम्नलिखित किसी एक विषय पर करीब ३० पंक्ति में निबंध लिखिए । **(१०)**

१. हे युवको : 'तुम्हारे द्वारा सत्संग का वंश रहेगा' – योगीजी महाराज ।
(स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) जुलै-अगस्त – २०१२, पा. नं. ८ से १०, ६६)

२. इन्टरनेट का अविवेक (स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती)सितम्बर – २०१२, पा. नं. १० से ११)

३. शास्त्रीजी महाराज का अविस्मरणीय प्रभाव
(स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती)जनवरी – २०१२, पा. नं. २४ से २८)

( ) ....

....

....

....

....

....

☞ **आगे के पृष्ठों में निबंध (ગુજરાતી ભાષામાં) दर्शाए गए है ।**

....

....

....

....

....

....

....

* * *

આગામી વર્ષે ૩ માર્ચ, ૨૦૧૩ના રોજ લેવાનાર મુખ્ય પરીક્ષાની પૂર્વતૈયારી માટે મુકાતા **પ્રી-ટેસ્ટના સંપૂર્ણ પ્રશ્નપત્રો હંમેશ મુજબ જાન્યુઆરીમાં (1st January, 2013ના રોજ) મુકાશે.** નિબંધ એ સામાન્ય જ્ઞાન સહિત મુક્ત વિષય હોય છે, જે અભ્યાસક્રમના પુસ્તકોમાંથી પૂછાતા નથી. આથી પરીક્ષાર્થીઓ નિબંધની તૈયારી સારી રીતે કરી શકે તે હેતુસર આપણે વહેલાસર ફક્ત તે યાદી આપની સમક્ષ મૂકી છે.

પ્રી-ટેસ્ટના નિબંધોની યાદી

પ્રવેશ : ૧ :

૧. 'હે યુવકો : તમ દ્વારા સત્સંગનો વંશ રહેશે.' - યોગીજી મહારાજ (સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ - જુ.- ઓગ. - ૨૦૧૨, પા.નં. ૮ થી ૧૦, ૬૬)

૨. ઈન્ટરનેટનો અવિવેક (સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ - સપ્ટે. - ૨૦૧૨ પા.નં. ૧૦ થી ૧૧)

૩. શાસ્ત્રીજી મહારાજનો અવિસ્મરણીય પ્રભાવ (સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ - જાન્યુ. - ૨૦૧૨, પા.નં. ૨૪ થી ૨૮)

પરીક્ષાર્થી શ્રી,
સસ્નેહ જય શ્રી સ્વામિનારાયણ

સત્સંગ શિક્ષણ પરીક્ષા માર્ચ ૨૦૧૩ના નિબંધોની પૂર્વ તૈયારી માટે નીચે જણાવેલ માર્ગદર્શન અને સૂચનો ધ્યાનમાં લેવા વિનંતી.

૧. નિબંધ એટલે કોઈ નિશ્ચિત વિષય ઉપર વ્યવસ્થિત, ચિંતનપૂર્વક અને મુદ્દાસરનું લખાણ. સત્સંગ શિક્ષણ પરીક્ષામાં પૂછાતા નિબંધો સામાન્ય જ્ઞાનના આધારે, પરીક્ષાર્થીના દૈનિક જીવનમાં સત્સંગના સદ્વાંચન અને કથા શ્રવણ અને મનન દ્વારા પ્રાપ્ત થયેલ જ્ઞાનની કસોટી કરતા ૩૫ થી ૪૦ લીટીમાં લખવાના હોય છે.

૨. પરીક્ષાર્થીઓની માગણીને માન આપીને આ વર્ષે પ્રી-ટેસ્ટમાં પૂછાનાર નિંબધોના વિષયો છ માસ અગાઉથી પરીક્ષાર્થીના એકાઉન્ટમાં અપલોડ કરવામાં આવ્યા છે.

૩. પ્રી-ટેસ્ટમાં જે તે પરીક્ષામાં પૂછાનાર નિબંધોના ત્રણે ત્રણ વિષયો આપવામાં આવ્યા છે. માર્ચ ૨૦૧૩ની ફાઈનલ પરીક્ષામાં આ ત્રણ વિષયોમાંથી કોઈપણ એક નિબંધ ચોક્કસપણે પૂછાશે જ. માટે જો આપ આ ત્રણે ત્રણ વિષયો તૈયાર કરશો તો આપ ચોક્કસપણે એક નિબંધ મુખ્ય પરીક્ષામાં ખૂબ જ સારી રીતે લખી શકશો.

૪. આ નિબંધોનું સામાન્ય બંધારણ, લખાણ(મેટર) મોટાભાગે ત્રણ - ચાર વર્ષ દરમ્યાનના સમયગાળામાં પ્રકાશિત થયેલ 'સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ'માંથી લેવામાં આવે છે.

૫. અહીં આપેલા નિબંધોનું લખાણ કેવળ દિશા સૂચક છે. આ જ લખાણ ગોખીને પરીક્ષામાં લખવાની જરૂર નથી. આથી વિશેષ સારા મુદ્દાઓનું ચિંતન-મનન કરી આપની રીતે પૂર્વ તૈયારી કરીને લખી શકો છો.

૬. **ગુજરાતી માધ્યમ (ભાષા) સિવાયના પરીક્ષાર્થીઓ માટે :** આ નિબંધોનું મૂળ પ્રકાશન ગુજરાતી ભાષામાં જ હોવાથી તેનું શબ્દશઃ ભાષાંતર ન કરતાં, તેનો ભાવાર્થ સમજીને પરીક્ષાર્થીએ પોતાની રીતે સમજીને તૈયારી કરવાની રહેશે. પરીક્ષા કાર્યાલય અંગ્રેજી કે હિન્દી ભાષામાં આ નિબંધોનું ભાષાંતર આપી નહિ શકે. તેથી ભાષાંતર કરવા અંગેનો પત્રવ્યવહાર કે ઈ-મેલ પણ પરીક્ષા કાર્યાલયને કરશો નહિ તેવી નમ્ર વિનંતી છે.

૭. ગુજરાતી ભાષા વાંચી, લખી કે બોલી ન શકતા હોય તેવા પરીક્ષાર્થીઓએ માતા-પિતા, વડીલો કે અન્ય સ્વજનો-સ્નેહીઓ પાસે વંચાવીને નિબંધનો ભાવાર્થ સમજી પોતાની રીતે, પોતાના શબ્દોમાં લખીને તૈયારી કરવાની રહેશે.

૮. One essay from the above list of essays will be asked in the Final Examination of March-2013.

॥ શ્રી સ્વામિનારાયણો વિજયતે ॥

સત્સંગ શિક્ષણ પરીક્ષા - પ્રવેશ

૧.

હે યુવકો ! તમ દ્વારા સત્સંગનો વંશ રહેશે...

ગામડાનાં માટીથી લીંપેલાં ખોરડાંઓમાં ગોઠણ પર પૂઠું ટેકવીને પત્ર લખતા યોગીજી મહારાજને જોઈને કોઈને કલ્પના પણ ન આવે કે આ સામાન્ય લાગતા સાધુની કલમેથી વિશ્વ-કલ્યાણના મહાન સંકલ્પોની પાવનકારી ગંગા ધસમસતી વહી રહી છે.

સન ૧૯૩૦માં એક તરફ આઝાદીનો જંગ છેડાઈ રહ્યો હતો, એક તરફ અનેક વિઘ્નોની કાંટાળી વાટ પર બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ સંસ્થા હજુ પ્રારંભનાં ડગલાં માંડી રહી હતી ત્યારે, યોગીજી મહારાજે યુવાનો માટે અધ્યાત્મનું રણશિંગું ફૂંક્યું હતું. યુવાનો દ્વારા જ ભગવાન સ્વામિનારાયણના સનાતન વૈદિક સિદ્ધાંતો, સંસ્કૃતિની પવિત્ર પરંપરાઓનું, વિશ્વના કલ્યાણનું વહન થઈ શકશે - એ ભાખીને એમણે સન ૧૯૫૨માં, મુંબઈમાં બી.એ.પી.એસ. યુવક મંડળનો મંગલ દીપ પ્રગટાવ્યો.

આ યુવકમંડળો દ્વારા યુવકોની શક્તિઓ ખીલે, એ માટે એમણે દેશ-વિદેશમાં ઠેર ઠેર યુવા અધિવેશનોનો અને સંમેલનોનો આરંભ કરાવ્યો. યુવાનોના જીવનઘડતર માટે બધું જ કરી છૂટવા તૈયાર યોગીજી મહારાજે પત્રોની ગંગાધારા વહાવીને સૌને જે જોમવંતી પ્રેરણાઓ આપી હતી, તે આજેય રૂંવાડાં ખડા કરી દે તેવી છે. ગામડાંમાં બેઠાં બેઠાં પૂર્વ આફ્રિકા અને શહેરોમાં એમણે લખેલા એ બળભર્યા પત્રોનીઅહીં એક ઝલક છે. અને આ ઐતિહાસિક પત્રોમાં આજના શાનદાર બી.એ.પી.એસ. યુવા અધિવેશનોનું બીજારોપણ છે....

ખાંધલી

તા. ૧-૧૧-'૫૬

સ્વસ્તિ શ્રી નૈરોબી મહાશુભસ્થાને પરમ ભગવદીય, પરમ એકાંતિક, સ્વામીશ્રીજી તથા શાસ્ત્રીજી મહારાજના લાડીલા રા.રા. સ્વધર્મનિષ્ઠ નૈરોબી હોલ આફ્રિકા યુવકમંડળની ચડતી કળા સ્વામીશ્રીજી અખંડ રાખે

સાક્ષાત્ ગાના પાસે ખાંધલી ગામથી લિ. આપને સંભારનાર સાધુ જ્ઞાનજીવનદાસજી તથા મોટા સ્વામી તથા નારાયણ સ્વામી તથા મોતીભાઈ તથા વેલજીભાઈ ઝીંઝાવાળા તથા હરમાનભાઈ તથા રણછોડભાઈ વાડીવાળા તથા સર્વેના ઘણા હેતથી સ્વામિનારાયણ વાંચશો.

આશીર્વાદ સાથે લખવાનું કે અહોહો ! આફ્રિકામાં યુવક મંડળનું સંમેલન ભરાશે તેવા અમારા રૂડા આશીર્વાદ છે. હે યુવક મંડળો ! તૈયાર થાવ ને આપણો વંશ સદાય સ્વામીશ્રીજી તથા શાસ્ત્રીજી મહારાજનો વંશ યુવકમંડળ દ્વારે છે, તો સૌ બળ રાખો.

(૧) ધર્મનિયમ, તિલક-ચાંદલા, શિક્ષાપત્રી પ્રમાણે વર્તન રાખવું. જેથી આપણો સૌને ગુણ આવે કે અહોહો, સ્વામિનારાયણ યુવકમંડળ આવું સાફ વર્તન રાખે છે, તો તેમનાં માબાપ તથા ગુરુ તથા હરિભક્તો કેટલું સર્વોપરિ વર્તન રાખતા હશે - તેમ સૌને ભાર પડે; માટે હે યુવકો ! કટિબદ્ધ તૈયાર થાવ. ભણવામાં હોશિયાર થાવ. કોઈ દિવસ પરીક્ષામાં નાપાસ ના થાવું તે ખાસ ભલામણ છે. તો ડંકો વગાડવો.

(૨) પોતાના આત્માને બ્રહ્મરૂપ માનવો. બ્રહ્મરૂપ એટલે ગુણાતીત-પોતાના આત્માને સ્થૂળ, સૂક્ષ્મ અને કારણ ત્રણ દેહથી પર વર્તવું. શિક્ષાપત્રીનો ૧૧૬મો શ્લોક પાળવો. તે શીખવવા સૌએ પ્રયત્ન કરવો. આવો અવસર-સંમેલન પહેલું. તે હવે ડંકો વાગશે.

(૩) તા. ૨૩, ૨૪, ૨૫ ત્રણ દિવસ અમો દેશમાં માળા ફેરવીશું, જેથી સંમેલન નિર્વિઘ્ને થઈ જાય. તેનો ડંકો આખા નૈરોબી શહેરમાં વાગે. વાહ સ્વામિનારાયણ યુવકમંડળ, એમ સૌ બોલે. જય જય નાદ થાય.

(૪) અહોહો, આ સંમેલનમાં ડંકો વાગશે. હવે જો બને તો વરસોવરસ નાતાલના દિવસોમાં એક વર્ષ નૈરોબી તો એક વર્ષ મોમ્બાસા, તો એક વર્ષ ટરોરો, તો એક વર્ષ કંપાલા, એક વર્ષ બીજા ગામ, એમ વારાફરતી ગામોમાં લાભ મળે. જે જે ગામના યુવકો જુએ તો તે તે ગામના જ્ઞાનમાં તૈયાર થાય.

(૫) આ સંમેલન ભરવાનો એક જ ઇરાદો છે. એક જ નિષ્ઠા, ધર્મ, જ્ઞાન, વૈરાગ્ય ને ભક્તિમાં સૌ તૈયાર થાય, તો કોઈ યુવકો ખરાબ રસ્તે ન જાય, માબાપની આજ્ઞા પાળે. આજના જમાનામાં ન ભળે તે આનંદ થકા ધર્મ પાળે, અભ્યાસ કરે, ફેલ-વ્યસનો ત્યાગ કરે ને શૂરવીર થાય, તે જ હેતુ છે.

(૬) આ સંમેલનમાં સ્વામીશ્રીજી તથા સ્વામી જાગા સ્વામી તથા સ્વામી ભગતજી મહારાજ, ગુરુ કૃષ્ણજી અદા તથા ગુરુ સ્વામી શાસ્ત્રીજી મહારાજ તથા નિર્ગુણદાસ સ્વામી તથા પૂજ્ય મગનભાઈ, મોટા સ્વામી તથા ભગતજીના શિષ્ય વિજ્ઞાનદાસજી તથા પુરુષોત્તમદાસજી સ્વામી હાજર રહેશે તે નક્કી ખાતરી છે. અમો બધા તેમની સેવામાં હાજર રહીશું અને ભારે ડંકો વાગશે.

(૭) અહોહો, આફ્રિકા સામી નજર છે તો દેશકાળ સુધરશે. આખો દેશ વેવારે સુખી થાશે ને જય જયકાર થઈ જાશે. સ્વામી શાસ્ત્રીજી મહારાજની દૃષ્ટિ આફ્રિકા દેશ ઉપર છે તો સૌ સુખી થાશો, રૂડા આશીર્વાદ છે.

(૮) આ સંમેલનનો બીજો હેતુ એ કે સંપ તથા સુહૃદભાવ વધારવાનો છે. એક જ બાપના દીકરા – સ્વામિનારાયણ ભગવાનના છીએ (એમ માનવું). ગુણાતીત સ્વામી ને મહારાજ મા-બાપ છે, આ હેતુ છે. તો માયા નીકળી જાય ને દિવસે દિવસે દિવ્યભાવ વધતો જાય.

પછી ગામડે ગામડે રજાના દિવસોમાં યુવકોને ફરવા મોકલવા-જ્ઞાન આપે, વાતું બોલે, હેઠા સૂઈ રહે, ટાઢે પાણીએ નાહી લે પણ ત્યાં ટાઢ સખત પડે છે, તો ઊના પાણીએ નાહી લે તેનો બાધ નથી. પણ પાંચ વાગે ઊઠે ને (રાત્રે) ૧૦-૩૦ વાગે લેસન કરીને આરામ કરે, ક્રોધ ન કરે. નીચી દૃષ્ટિ રાખીને મહારાજની મૂર્તિ ધારીને ચાલે. કદી પ્રાણ જાય પણ જૂઠું ન બોલે - તે નિયમ ધારે - આ હેતુ છે.

(૯) આ સંમેલન સારામાં સારું ભરાશે. તો દેશના યુવકો તે પ્રમાણે કરે એ અમારો હેતુ છે. દેશના યુવકો તૈયાર કરીએ છીએ.

(૧૦) હવે સંમેલનમાં સ્વામીશ્રીજી તથા શાસ્ત્રીજી મહારાજના રૂડા આશીર્વાદ છે. વરસો વરસ યુવકોનું સંમેલન ભરો. ઓછામાં ઓછા ૫૦૦૧ યુવકો આફ્રિકામાં તૈયાર થાય આવી રીતે આશીર્વાદ છે.

(૧૧) અગિયાર કલમ લખી છે તો તે પ્રમાણે થઈ જાશે. સ્વામીના લાડીલા ને **જે યુવકોને ટેકો આપશે ને તેમને મદદ કરશે તેમને શ્રીજીમહારાજ તથા શાસ્ત્રીજી મહારાજ સેવામાં બેસારશે. તે સદાય તેમને અંતઃકરણમાં ટાઢું રહેશે. મોટા મોટા હરિભક્તો ! સૌ યુવકોને જમાડશો, મદદ આપશો, ને કોઈ ગરીબને ભણવામાં મદદ આપજો. (જે આ સેવા કરશે) તેમને મહાફળ થશે. મહારાજ મળશે.**

બોલો સ્વામિનારાયણની જય, બોલો મૂળ અક્ષર સ્વામીની જય, સ્વામી જાગા સ્વામીની જય, બોલો ભગતજી મહારાજની જય, બોલો કૃષ્ણજી અદાની જય, બોલો સ્વામી શાસ્ત્રીજી મહારાજની જય... આફ્રિકાના નાના-મોટા હરિભક્તો સ્વામીના સંબંધવાળા તથા તમામ યુવકમંડળની જય જય જય જય સદા જય.

દ. સેવક સાધુ જ્ઞાનજીવનદાસના પ્રેમ સાથે
જય સ્વામિનારાયણ વાંચશો.

આ સાથે ડેરીનાં પુષ્પ મોકલ્યાં છે તે સંમેલનમાં રસોઈ કરો તેમાં એક એક પાંખડી તમામ ભોજનમાં ઠાકોરજી જમાડ્યા બાદ નાખશો. એટલે પ્રસાદી તમામ થઈ જશે. જે જમશે તે બળમાં આવશે.

•

તા. ૧૨-૧૦-'૫૭, શનિવાર, સવારના ૧૨

અહોહો ! હે યુવક મંડળો ! બળ રાખો, રવિવારનો અમુલ દિવસ કીમતી સમજીને સભા કરો. હજુ આપણાં મંડળો ૪૦૦ સુધી છે, પણ સ્વામી પાસે એવો સંકલ્પ કરેલ છે કે ૧૦૦૧ મંડળ સ્થપાય ને તેમને નિયમિત પત્રિકા જાય તે વાંચીને સભા કરો, તે જ અમારી સ્વામીશ્રીજી તથા શાસ્ત્રીજી મહારાજ પાસે પ્રાર્થના ચાલી રહી છે.

•

વરણામા, તા. ૨-૩-'૫૮

...હવે સિદ્ધાંતના શબ્દો : તમામ યુવકોને બ્રહ્મજ્ઞાન આપવું, તેમાં સાકાર ભગવાન, સર્વોપરિ ઉપાસનાની વાત કરવી. અત્યારે યુવકોમાં જાગૃતિ આવેલી છે. મોક્ષ મેળવવા તૈયાર થયેલા છે. આજથી ૨૮ વર્ષ સુધીમાં અમો મથતા તોપણ કોઈ યુવકો તૈયાર થતા ન હતા. ઊલટા નિંદા કરતા. તે ગામોગામ જોવામાં આવતું. હાલ તો, પહેલાં સ્વામીશ્રી (શાસ્ત્રીજી મહારાજ) ધામમાં જતા પહેલાં આશીર્વાદ લીધા કે સ્વામી દયા કરો કે યુવકો સત્સંગી થાય, તે આશીર્વાદે યુવકોમાં અત્યારે પલટો થવા લાગ્યો છે. નહીં તો કૉલેજવાળા અને સર્વે સ્કૂલવાળા ન જ માને. તેમના જીવનમાં ધર્મભાવના ઉત્પન્ન થઈ.

ગુણાતીતાનંદ સ્વામી જૂનાગઢ બોલેલા કે મેં ૨૦૦ યુવકોને બ્રહ્મવિદ્યા ભણાવી છે. એમ સ્વામીએ જાગા સ્વામીને મોંઢે વાત કરેલી. તે પ્રતાપે યુવકોમાં પલટો આવ્યો છે. કોઈ યુવક નિંદા ન કરે, સામું જોઈ રહે ને ભાવના પ્રગટે છે. તે હવે અત્યારે રણ રમવાનો વખત આવ્યો છે. તો અત્યારે જો આપણે સાવધાન નહીં રહીએ તો વખત જાતો રહેશે. માટે દરેક કૉલેજો અને સ્કૂલો રંગી નાખો.

ત્રણ વરસમાં મહારાજના પ્રતાપે ૫૦૦૧ યુવકો જ્ઞાનમાં, ધર્મમાં અને ભક્તિમાં તૈયાર થશે તો જે દેશ અપવિત્ર દારૂ-માંસમાં ભરપૂર હોય તેમાં આવાં શુદ્ધ રતન નીકળે તે મહારાજની કેવી દયા ! જુઓ લંડનમાં મહેન્દ્રભાઈ તથા મેઘાણી જાગ્રત થયા છે. જે લોકો આપણી સ્વામિનારાયણની ટીકા કરતા હતા, તે યુવકો કંઠી બંધાવીને તિલક ચાંદલો કરે છે, પૂજા કરે છે. કેવું વાતાવરણ ચાલ્યું છે !

માટે હવે રંગ જમાવવાનો વખત છે. માટે સૌ યુવકો તૈયાર થાઓ અને ડંકો વગાડો. સ્વામી શાસ્ત્રીજી મહારાજનો આશીર્વાદ છે તે જરૂર ફળીભૂત થયો છે. તો હવે આપણે એવા યુવકો વધારવાની કોશિશ કરો. બોલો સહજાનંદ સ્વામીની જય !

બોલો યુવકમંડળ ભક્તોની જય ! જય ! જય !

દા. સાધુ જ્ઞાનજીવનદાસના
જય શ્રી સ્વામિનારાયણ

•

તા. ૨૨-૧૦-'૫૯
કપોળવાડી, પાંજરાપોળ ગલી, મુંબઈ

હવે તમો યુવકો કટિબદ્ધ તૈયાર થાઓ. આખા દેશના યુવકો કટિબદ્ધ તૈયાર થાઓ. આજ્ઞા, ઉપાસના, સદ્‌ભાવ ને પક્ષમાં શૂરવીરપણું રાખો ને જે જે તમારા સંબંધમાં આવે તેને જ્ઞાનની વાત કરવી. ધર્મની વાત કરવી. નિર્દોષબુદ્ધિ રાખવી. તમારો મહિમા હું એટલો બધો સમજી ગયો છું કે તમો બધા બ્રહ્મવિદ્યા માંહેલા પુરુષ આવ્યા છો તો આટલી નિષ્ઠા બેઠી છે. તો હવે તમો આખા દેશના યુવકો પૂર્વના સંસ્કારી છો એમ અમો માનીએ છીએ. તો તમે કોઈ કુસંગના જોગે કરીને પૂર્વના સંસ્કાર ભેળાવા ન દેવા. મહારાજ-સ્વામીનું બળ રાખવું. આપણને સાક્ષાત્ શાસ્ત્રીજી મહારાજ સ્વામી મળ્યા છે તો તેમને બળ રાખવું. જે યુવકો અભ્યાસ કરતા હોય તેમણે આઠ કલાક વાંચવું. જરા પણ તેમાં વિરામ ન પામવો. કોઈ વખત નપાસ ન થવું. તે અમારી ખાસ

આગ્રહભરી વિનંતી છે. જો કોઈ યુવક નપાસ થશો ને પરિણામ સારું નહિ લાવો તો સ્વામીશ્રીનો રાજીપો ઓછો થઈ જાશે. માટે નિશાન ઉપર સુરત રાખવું. બાકીના ભાગમાં કથાવાર્તા કરવી. રવિવારે સભા ભરવી. યુવકો વધારવા. જો તમે યુવકો ધારશો ને સ્વામીશ્રીજીની પ્રેરણા મળશે તો ધાર્યા કરતા ઘણા યુવકો એકાંતિક ધર્મ સિદ્ધ કરશે. તમારા જીવનમાં સાક્ષાત્ સ્વામીશ્રીજી, શાસ્ત્રીજી મહારાજ બિરાજશે ને તમોને એવો કાંટો ચડી જશે કે તમો બીજા યુવકોને એકાંતિક બનાવશો. આ નૂતન વર્ષના બેસતા વર્ષના મારા અંતરના આશીર્વાદ છે.... મારી આટલી ભલામણ છે તો જીવમાં ઉતારશો ને ખુમારી રાખજો ને મોળા ન પડવું. તમારે પણ દૂર દેશમાં જઈને દૂર દેશમાં નિષ્ઠા - સત્સંગની મહારાજના સ્વરૂપની કરાવવી પડશે. બળ મહારાજ-સ્વામી પ્રેરશે. માટે અમારી આટલી ઈચ્છા પૂરી કરજો.

દા. સાધુ જ્ઞાનજીવનદાસના જય શ્રી સ્વામિનારાયણ

•

તા. ૧૪-૬-૧૯૬૦, શ્રાવણ વદી-૮, જન્માષ્ટમી, મોટો વ્રતનો તહેવાર, રવિવારના ૫-૩૦ વાગે, બિલિમોરા-મુંબઈ લાઈન.

હે વડીલ હરિભક્તો, બધાયને આ સૂચના છે કે તમામ વડીલ ભાઈઓ તમારા દીકરાને રવિવારની સભામાં જાવા દેવા. ભવિષ્યમાં તે યુવકો દ્વારે સત્સંગ વધશે. કારણ કે યુવકો ચારિત્રશીલ સારા નીવડે તો જ સૌને ભાર પડે. જો રવિવારે સભામાં આવે તો સારા ચારિત્રવાન થાય. માટે દરેક મા-બાપે રવિવારની સભામાં તમારા બાળકોને સભામાં મોકલવા, તો જ સારા નીવડશે. બે વર્ષમાં બધાય આફ્રિકાના ૫૦૦૦ યુવકોનું સંમેલન ભરવાનું છે. આ પત્રિકા ખરા પ્રેમથી રવાના કરી છે તો બળ રાખજો. એક-મના, એક સંપ ને સુહૃદભાવથી આ પ્રયત્ન કરજો. તેમાં સ્વામીશ્રીજી તથા શાસ્ત્રીજી મહારાજ ઘણાં જ રાજી થશે.

•

જાન્યુઆરી, ૧૯૭૧, ગોંડલ

ગોંડલમાં યુવક અધિવેશન, મે-૧૯૭૧માં ભરાશે. વાતો, કીર્તન, વચનામૃત વગેરેની પરીક્ષા લેવાશે. ઈનામો મળશે, ચાંદ મળશે. સંતો કટિબદ્ધ થાય. અત્યારથી તૈયારી કરવી પડે. ૨૦,૦૦૦ યુવકો થવા જોઈએ. લંડનના પેપરમાં જાહેરાત થાય કે જુઓ અધિવેશન સર્વોપરી ભરાયું. આ ગુણાતીત સર્વોપરી સ્થાન તેમાં બધાએ તૈયાર થવાનું છે. શાસ્ત્રી મહારાજ આપણ ગુરુને આગળ રાખીને કાર્ય કરવાનું છે. સર્વોપરી સંમેલન થવું જોઈએ ને એમાં ફેર પડે તો ગુણાતીત બાપા રાજી ન થાય. મે મહિનો, બધાને રજા છે તો બધા યુવકોએ તૈયાર થઈને આવવાનું છે. તો અધિવેશન સર્વોપરી સારામાં સારું કરવું. જેવો મને ઉમંગ છે તેવો ઉમંગ જો બધાને થાય તો જ અધિવેશન સર્વોપરી થાય.

દા. સાધુ જ્ઞાનજીવનદાસના હેતથી જયશ્રી સ્વામિનારાયણ ◆

યુવા લેખકોની કલમે...

ઈન્ટરનેટનો અવિવેક -
સુનામીનાં મોજાંની ગતિએ વેરે છે ચારિત્ર્યનો વિનાશ...

- જિજ્ઞેશ નાવડિયા (ભાવનગર)

કુશિયાના દરિયાકિનારે તબાહી મચાવતાં સુનામીનાં ૩૨ ફીટ ઊંચાં વિકરાળ મોજાંનું વિનાશક દૃશ્ય જોયાનું યાદ છે ? એ વિનાશક મોજાંઓએ ૧૯,૦૦૦ લોકોનો ભોગ લીધો, તેનાથી પણ અનેકગણા વધારે લોકોને ઘાયલ કર્યા.

સુનામીનાં એ દૃશ્યો યાદ આવતાં જ ઈન્ટરનેટનાં મોજાંઓની પણ યાદ આવી જાય છે. કદાચ આપને પ્રશ્ન થાય કે ઈન્ટરનેટને સુનામીની ઘટનાઓ સાથે શો સંબંધ છે ?

જોકે એ વાત સૌને સ્વીકાર્ય જ છે કે ઈન્ટરનેટની શોધને કારણે લોકોને ઘણી રીતે લાભ થયા છે, પરંતુ વધતા જતા ઈન્ટરનેટના વ્યાપની સાથે તેના વપરાશના અવિવેકને કારણે જ તે વિનાશક પરિબળ બની ગયું છે. એટલે જ સુનામીનાં મોજાંઓ અને ઈન્ટરનેટ બંનેની વિનાશકતા વચ્ચે સામ્યનો સંબંધ છે. જાપાનનાં સુનામી મોજાંએ જે વિનાશ કર્યો તે નજરે જોઈ શકાય તેવો વિનાશ હતો. ઈન્ટરનેટના અવિવેકનાં વિનાશક મોજાં પણ વિનાશ વેરે છે, પરંતુ તે જલદી લોકોની નજરે ચઢતો નથી.

કેવી રીતે વિનાશ વેરે છે ઈન્ટરનેટનાં મોજાંઓ ?

તો આવો, અહીં આપણે ઈન્ટરનેટના વપરાશના અવિવેકથી યુવાનો પર થતાં ખરાબ પરિણામો વિશે ચર્ચા કરીએ.

અભ્યાસ પર વિપરીત અસર : થોડાં વર્ષો પહેલાં ઈન્ટરનેટનું આગમન થયું ત્યારે યુવાનો મોટે ભાગે સાઈબર કાફેમાં જઈને ઈન્ટરનેટનો ઉપયોગ કરતા હતા. પ્રમાણમાં તે થોડું ખર્ચાળ પણ હતું. પરંતુ ધીમે ધીમે હવે મધ્યમવર્ગીય ઘરોમાં પણ ઈન્ટરનેટ સામાન્ય બની રહ્યું છે. અને ટુ-જી કે થ્રી-જી ટેક્નોલોજીની સાથે સ્માર્ટ ફોન આવ્યા પછી હવે મોબાઈલ ફોનમાં પણ ઈન્ટરનેટનો વપરાશ વધી રહ્યો છે. પરિણામે ઈન્ટરનેટનો ઉપયોગ નવી પેઢીમાં એટલી હદે વધી રહ્યો છે કે, ઈન્ટરનેટ એક વ્યસન જેવું વળગણ બની રહ્યું છે. અનેક સર્વેક્ષણોએ આ વાત પુરવાર કરી છે. ઈન્ટરનેટની આ આદત કે વ્યસનને કારણે નાનાં બાળકો સહિત યુવાનોના અભ્યાસમાં ખરાબ અસર પડે છે.

૧૩ વર્ષથી વધારે ઉંમરનાં આધુનિક કિશોર-કિશોરીઓ ઈન્ટરનેટ પર મોટાભાગનો સમય ઓનલાઈન ગેમ્સ, બોય કે ગર્લ ફ્રેન્ડ સાથે ચેટિંગ, બીભત્સ(પોર્ન) ફિલ્મો જોવામાં સમય વ્યતીત કરે છે. આને કારણે એક તો, સમયનું ભાન ભૂલતા તેને વાંચવા કે અભ્યાસ કરવાનો નક્કર સમય જ બચવા પામતો નથી. અને બીજું, ઈન્ટરનેટના અવિવેકી ઉપયોગને કારણે તેમનાં મન-મગજ પર માઠી અસર પડે છે. નાનાં બાળકો અને કિશોરોમાં પોર્ન દૃશ્યો જોવાનું પ્રમાણ વધતું જતું હોવાથી તે અભ્યાસમાં એકાગ્રતા લાવી શકતા નથી. અભ્યાસ કરતી વખતે તેણે જોયેલાં બીભત્સ કે અશ્લીલ દૃશ્યો તેને એકાગ્રતાથી અભ્યાસ કરવા દેતા નથી. આ જ રીતે નેટ પર રમેલી ગેમ્સ કે ચેટિંગ વગેરે તેના વિચારોમાં ઘુમરાતા રહે છે, તેથી તે અભ્યાસમાં એકાગ્રતાથી વાંચી શકતો નથી. એટલે તેના અભ્યાસમાં તે નબળો પડે છે. આથી તે નાપાસ થાય છે અથવા તેજસ્વી હોવા છતાં તેના પરિણામ ઉપર ગંભીર અસર જોવા મળે છે.

આમ, ઈન્ટરનેટના અવિવેકને કારણે બાળકો-કિશોરો-યુવાનોના અભ્યાસ પર ખૂબ ખરાબ અસર પડે છે.

સમયનો બગાડ : ઈન્ટરનેટના વપરાશના અવિવેકનું બીજું ખરાબ પરિણામ છે - સમયની બરબાદી. વર્તમાન સમયમાં ઈન્ટરનેટ પર સોશિયલ સાઈટ્સ જેવી કે ફેસબુક, ઓરકુટ, ટ્વીટર વગેરે સાઇટ્સ પર યુવાનો ચેટિંગ, સ્ત્રી-મિત્રો સાથે અનહદ સમયનો બગાડ કરે છે. ૨૦૧૦ના ફેબ્રુઆરી સુધીમાં જગતભરમાં ઈન્ટરનેટ વાપરનારા ૧.૭ અબજ લોકો હતા. તેમાં ૨૦% ફેસબુક પર સમય અને શક્તિ વેડફતા હતા. આજે જગતના લોકો જે ઈન્ટરનેટ વાપરે છે તે પૈકી રોજ ૮ અબજ મિનિટ તો ફક્ત ફેસબુક પર જ વેડફે છે ! બાકી ઓરકુટ, ટ્વીટર વગેરે અન્ય વિવિધ સાઇટ્સ દ્વારા ફાલતુ અને હલકી વાતોમાં કે અન્ય વ્યર્થ સાઇટ્સમાં ઈન્ટરનેટનો વપરાશ કરતા સમયનો જે બગાડ થાય છે તેનો આંકડો કાઢવાનું જ અશક્ય છે. એક સર્વેક્ષણ મુજબ હાલમાં ૧૦.૮ કરોડ અમેરિકન લોકો સવાર-બપોર-સાંજ અને રાત્રિનો સમય ઈન્ટરનેટ પાછળ વેડફે છે. મદ્રાસનું 'બિઝનેસ લાઇન' મેગેઝિન કહે છે કે, ભારતમાં ૩૦૮ કરોડ ભારતીયો ફેસબુકનો વપરાશ કરે છે. યુવાનો આવા સમયનો બગાડ કરીને પોતે અભ્યાસ પર ધ્યાન કેન્દ્રિત કરતા નથી.

ચારિત્ર્યહનન અને પ્રેમસંબંધો : વચનામૃત ગઢડા પ્રથમ પ્રકરણના ૧૮માં ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણે સાત માળની હવેલીનું દૃષ્ટાંત આપીને ચારિત્ર્ય શુદ્ધ રાખવા માટે સંગશુદ્ધિની વાત કરી છે. જે વ્યક્તિ જેવાનો સંગ કરે છે તેવું તેનું અંતઃકરણ થાય છે. કોઈ વ્યક્તિ, કામ, ક્રોધ વગેરેથી વાસનાથી દૂષિત એવા વાતાવરણનો સંગ કરે ત્યારે તેનું તે પ્રકારનું અંતઃકરણ થાય છે.

ઈન્ટરનેટે વર્તમાન સમયમાં આવી જ ખરાબ પરિસ્થિતિનું સર્જન ઘરોઘર કર્યું છે. ઈન્ટરનેટ દ્વારા કેવી કેવી વ્યક્તિઓનો કુસંગ સહજતાથી થાય છે તેની ઈન્ટરનેટ વાપરનારાઓને ખબર પણ નથી હોતી. વળી, ઈન્ટરનેટ પર યુવાનોની એક નબળી કડી હોય તો તે છે - બીભત્સ (પોર્ન) દૃશ્યો અને ફિલ્મો તેમજ હોરર ફિલ્મો. અવિવેકને કારણે યુવાનો તેમાં ગળાડૂબ રહે છે અને પોતાનું અંતઃકરણ ખરાબ કરે છે. અંતઃકરણ ખરાબ થતાં તેનું ચારિત્ર્ય પણ તે પ્રકારનું ખરાબ થાય છે. ફિલ્મોમાં જોયેલી ખૂન, મારામારી, બીભત્સતા વગેરેનું અનુકરણ કરે છે અને ખરાબ પરિણામ લાવે છે. હાલમાં ગુજરાતમાં ૧૭૯ કેસ એવા નોંધાયેલા છે, જેની ઉંમર ૧૮ વર્ષથી નાની છે અને તે ખૂન, બળાત્કાર, મારામારીમાં સંકળાયેલા છે. (૧) ઇંગ્લેંડના એક બાળક માઈકલ સ્યાને 'ફર્સ્ટ બ્લડ' નામની ફિલ્મ જોઈ, તેના હીરો સેલ્વેસ્ટર સ્ટેલોનની જેમ આઠ કલાકમાં ૧૯ ખૂન કરી નાખ્યા. લંડનનું વિખ્યાત વર્તમાનપત્ર ડેઈલી ટેલિગ્રાફ ૨૦-૧-૧૧ના રોજ લખે છે કે, બ્રિયાન લુવીસ નામની વ્યક્તિની પત્ની હેયલી ઈન્ટરનેટમાં ફેસબુક પર વધારે પડતો સમય

ગાળતી હતી, એટલે તેના પતિએ શંકાની દૃષ્ટિએ તેના ચાર બાળકો સહિત તેને મારી નાખી. આવી બધી ઘટનાઓની સંખ્યા અત્યારે છે તેના કરતાં ટૂંકા ભવિષ્યમાં જ અગણિત થઈ ગઈ હશે.

વળી, ઇન્ટરનેટ પર યુવાનોને ફસાવવા માટે સ્ત્રીમિત્રો બનાવવા માટેની લાલચો આપવામાં આવે છે, જેનાથી યુવાનોના સમય, ચારિત્ર્ય અને નાણાંનો ખૂબ બગાડ થાય છે. યુવાન અવસ્થામાં કારકિર્દી બનાવવાને બદલે આવા સંબંધોમાં પડીને પોતાનું જીવન બરબાદ કરે છે. પરિણીત યુવાનો પણ પોતાના સંસારમાં આગ ચાંપે છે. બે ઉદાહરણો : (૧) ટ્રેસી ગ્રીનહાફે પ્રેમલગ્ન કરેલાં. તેને બે પુત્રી પણ હતી. ટ્રેસી ગ્રીનહાફ ઇન્ટરનેટ દ્વારા ફેસબુકમાં બીજા સાથે પ્રેમસંબંધોમાં લપેટાઈ ગઈ. પતિએ તેને મારી નાખી અને પોતે આપઘાત કર્યો. (૨) ટ્રિનિદાદમાં રહેતો પોલ બ્રિસ્ટર જે ઇન્ટરનેટ દ્વારા ફેસબુક પર લંડનમાં રહેતી પરિણીત કેમિલિ સાથે પ્રેમમાં પડ્યો. ત્યારબાદ કેમિલિ બીજા સાથે પ્રેમમાં પડી છે. તે જાણતાં પોલબ્રિસ્ટરે લંડન આવીને કેમિલિને છરીના ૨૦ ઘા મારીને હત્યા કરી નાખી.

કૌટુંબિક સંબંધો અને વિકાસ પર અસર : ઇન્ટરનેટની આ માયાજાળમાં કિશોરો વધારે સમય ઇન્ટરનેટ પર ગેમ રમે છે. તે કિશોર કુટુંબમાં માતાપિતા, ભાઈબહેન સાથે વાતચીત, રમત-ગમત કરવાને બદલે ગેમ રમવામાં જ પડ્યા રહે છે. જેનાથી તે એકલવાયો થઈ જાય છે. તથા ગેમમાં મારામારી, ખૂન, વગેરે આવતું હોવાથી તેનો સ્વભાવ પણ ચીડિયો અને ક્રોધિત થઈ જાય છે. ઇન્ટરનેટ પર વધારે પડતો સમય બેસી રહેવાથી કિશોરોને આંખના નંબર આવે છે ને આંખને નુકસાન કરે છે. તથા તે બાહ્ય મેદાનની રમતગમત ન રમતો હોવાથી તેની શારીરિક કસરત પણ થતી નથી.

વાંચન અને વિચાર : ઇન્ટરનેટ પર જે વિશે માહિતી મેળવવી હોય તે અંગે સર્ચ કરતાં તે માટેની હજારો ફાઇલ પૂરી પાડવામાં આવે છે. આથી કિશોરોમાં પુસ્તકવાંચનમાં ઘટાડો થતો જોવા મળે છે. ઇન્ટરનેટ પર તૈયાર મટીરિયલ્સ મળતું હોવાથી તેણે કિશોરોના મગજ પર કબજો જમાવી દીધો છે. તેથી કિશોરો નવું વાંચવાને બદલે સીધું ઇન્ટરનેટ પરથી તૈયાર નકલ કરવા લાગ્યા છે. તેની વિચારવાની આંતરિક શક્તિનો વિકાસ થતો નથી. તેને નવા ક્રીએટિવ આઇડિયા આવતા નથી. તે વિચારથી ઇન્ટરનેટનો ગુલામ થઈ જાય છે.

આવા સંજોગોમાં ઇન્ટરનેટનો ઉપયોગ કરવાનો વિવેક પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજ શીખવે છે. તેઓ કહે છે કે, 'આપણા ચારિત્ર્ય કે આપણા નિયમ-ધર્મનો લોપ થાય એવી પ્રવૃત્તિ કરવી જ નહીં. એમાં પ્રગતિ લાગતી હોય તોય તે અધોગતિ જ કરાવે છે.'

આવો, આપણે પણ સ્વામીબાપાના આદર્શ યુવાનો બી.એ.પી.એસ.ના ચારિત્ર્યવાન યુવાનો બનીને સૌને માટે એક આદર્શ બની રહીએ અને સ્વામીશ્રીજીને રાજી કરીએ. અસ્તુ...◆

3.

દિવ્ય અને અવિસ્મરણીય પ્રભાવ : શાસ્ત્રીજી મહારાજનો...

- ભારતરત્ન શ્રી ગુલઝારીલાલ નંદા
- શ્રી ભાઈલાલભાઈ પટેલ

આગામી વસંતપંચમીએ બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજનો ૧૪૬મો જન્મોત્સવ ઊજવાશે, પરંતુ ૧૪૬ વર્ષ પછીય તેઓના દિવ્ય વ્યક્તિત્વ ને પ્રભાવનો ઇતિહાસ જાણે ગઈ કાલનો જ હોય તેવો તાજો અનુભવાય છે. આજે ૧૦૦ વર્ષો પછી પણ, બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ સંસ્થાના એ સંસ્થાપકની દિવ્ય ચેતના સંસ્થાના વિરાટ વિગ્રહમાં ચૈતન્ય વહાવી રહી છે. તેઓના તે દિવ્ય પ્રભાવથી પ્રભાવિત થનારા અનેક મહાનુભાવો પૈકી શ્રી ગુલઝારીલાલ નંદા ભારતના ઇતિહાસનું એક મહત્ત્વપૂર્ણ પૃષ્ઠ છે. બે વખત ભારતનું કાર્યકારી વડાપ્રધાનપદ મેળવનાર, સંનિષ્ઠ રાષ્ટ્રસેવક અને ભારતરત્નનું બહુમાન મેળવનાર શ્રી નંદાજી બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજના એક સંનિષ્ઠ ભક્ત હતા. તેમના જીવનમાં બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજે પાથરેલો પ્રભાવ તેમના જ શબ્દોમાં અહીં પ્રસ્તુત છે. વસંતપંચમીએ બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજને એક સ્મરણાંજલિ...

મારા કુટુંબમાં સ્વામિનારાયણ સત્સંગ નહોતો. પેઢીમાંય નહીં... કંઈક ભગવાનની ઇચ્છાથી સામાન્ય નિમિત્તથી જ હું શાસ્ત્રીજી મહારાજને મળ્યો. ભગવાં ધારણ કરેલ ઘણા સાધુસંતોને હું મળેલો, અનેક સંપ્રદાયનાં ધાર્મિક પુસ્તકો મેં વાંચેલાં. બી.એ.માં અભ્યાસ કરતો હતો ત્યારે સ્વામી રામતીર્થનાં પુસ્તકો વાંચતો હતો. ધાર્મિક પુસ્તકો વાંચવાની રુચિ ખરી, પણ સમજવાની વાત નહીં. આર્ય સમાજ તથા ઉદાસી પંથના માણસોના સંસર્ગમાં આવેલો. ૧૯૩૨માં રાધાસ્વામી સંપ્રદાયનાં પુસ્તકો વાંચવામાં આવ્યાં, ઇચ્છા જાગ્રત થતાં આગ્રા ગયો - મળ્યા. સંસ્થા ઘણી સારી પણ ત્યાંથી કંઈ સારી છાપ લઈને પાછો ફર્યો નહીં.

૧૯૩૪માં પ્રૉ. જેઠાલાલ સ્વામિનારાયણે અમદાવાદ શાહપુરમાં પૂજ્ય જેઠીબાને (શ્રી ખેંગારજીભાઈનાં માતુશ્રી) સમાધિ થતી હતી તે વાત શ્રી આયંગર(લેબર કમિશનર)ને કરેલી. શ્રી આયંગર સાથે હું શરૂઆતમાં શ્રી ખેંગારજીભાઈને ઘેર, સમાધિ જોવા ગયો હતો. સમાધિ અંગે ઘણું સાંભળેલું, છતાં શંકા રહેતી. તેથી પૂજ્ય જેઠીબા જ્યારે સમાધિમાં બેઠાં ત્યારે મેં પૂછ્યું. તેમણે કહ્યું, 'હવે શાસ્ત્રીજી મહારાજ અમદાવાદ પધારે ત્યારે તેમને મળવું. તેમની કૃપાથી આ બધું બને છે.'

પછી શાહપુર આમલીપોળમાં સ્વામીશ્રી શાસ્ત્રીજી મહારાજનાં દર્શન કરવા ગયો. ફરીથી દર્શને ગયો ત્યારે પાછળ બેઠો હતો. ત્યારે સ્વામીશ્રીએ બોલાવી દૃષ્ટિ કરી અને કહ્યું, 'તમો આજના નથી, તમો તો મહારાજના વખતના જૂના સંબંધવાળા છો.' આ પહેલાં હું ઘણા મહાત્માઓને મળ્યો હતો, પરંતુ અહીં તો પ્રથમ દર્શને જ સ્વામીશ્રીનું આકર્ષણ થયું. ત્યારપછી તેઓ જ્યારે જ્યારે અમદાવાદ પધારતા ત્યારે હું તેમનાં દર્શને જતો અને તેમનાં દર્શનથી શાંતિ અનુભવતો. વળી, સંપ્રદાયના તત્ત્વજ્ઞાન કે ઉપાસના સંબંધી પણ જે જે શંકાઓ થતી તે તેમના પ્રસંગથી દૂર થઈ જતી.

હું જિજ્ઞાસા વૃત્તિથી જ ગયેલો. કોણ જાણે શું થયું ? ત્યારથી જ સંબંધ બંધાયો. આંતરિક શક્તિથી ખેંચાણ થતાં તેમની પાસે આવવાની ઇચ્છા થતી અને હું આવતો.

મને સ્વામીશ્રીનાં દર્શન કરવાનું અને તેમનો સમાગમ કરવાનું ગમતું. બીજી પ્રવૃત્તિમાં કાંઈ રસ ન હતો. સ્ત્રીઓના પ્રશ્ન અંગે શંકા થતી કે આ સંપ્રદાયમાં સ્ત્રીઓના સંસર્ગનો સાધુઓને નિષેધ કર્યો છે તો તે સ્ત્રીઓનું કલ્યાણ શી રીતે થાય? પરંતુ સ્વામીશ્રીના સમાગમથી આ શંકા દૂર થઈ ગઈ. સ્ત્રીઓમાં શ્રદ્ધા અને સમજણ દૂરથી પણ જાગ્રત થાય. તેમનામાં ભક્તિ પ્રગટ થાય અને એ રીતે તેમનું કલ્યાણ થાય. સ્ત્રીઓ સાથેના સીધા સંપર્કથી નાના કે અણસમજવાળા સાધુઓની વૃત્તિ બગડે, અને અંતે ભ્રષ્ટાચાર ઉત્પન્ન થાય. આ સમજણથી મારી શંકાઓનું સમાધાન થઈ ગયું. કેટલીક વખત નિર્ગુણદાસસ્વામી જોડે પણ ચર્ચા થતી. શ્રી અંબાલાલ સારાભાઈ (ડૉ. વિક્રમ સારાભાઈના પિતાશ્રી અને વિખ્યાત ઉદ્યોગપતિ) પણ સ્વામીશ્રીની વાત મારી પાસેથી સાંભળી બે ત્રણ વખત સ્વામીશ્રીનાં દર્શને આવેલ. શાસ્ત્રોનાં કે બીજા કોઈપણ પ્રમાણો કરતાં પણ સ્વામીશ્રી સત્યવક્તા છે એટલા જ ભાવથી તેઓ સ્વામીશ્રીની વાતો સાંભળતા અને સ્ત્રીઓના કલ્યાણ અંગેની તેમની શંકાનું પણ સમાધાન તેમને થઈ ગયું હતું.

૧૯૩૩થી ૧૯૪૨ સુધી આ પ્રમાણે ચાલ્યું પણ ત્યાં સુધી વર્તમાન ધરાવેલ નહીં ! ૧૯૪૪માં વર્તમાન ધરાવેલ. સત્સંગમાં ચર્ચા થાય ત્યારે મારા મનમાં ઘણા વાંધા ઊઠે. મગજ કબૂલ કરે નહીં. નિર્ગુણ સ્વામી સાથે વાતચીતનો પ્રસંગ થતો. રામકૃષ્ણ વગેરે ઘણા ભગવાન થઈ ગયા તો પછી હવે સ્વામિનારાયણ ભગવાન નવા શા માટે ? મહારાજને ભગવાન માનતો નહીં. પૂજ્ય સ્વામીશ્રી કહેતા કે કોઈ વખતે ગેડ બેસશે. પછી પ્રશ્નો થતા કે ગુણાતીત સ્વામી શા માટે ? ક્યારે આ શંકાઓ ગઈ, હું ક્યારે માનતો થયો તેની કંઈ ખબર પડી નહીં. આંતરિક રીતે જ ધીમેધીમે સ્વામીશ્રીના પ્રસંગથી બધું થઈ ગયું.

મનમાં વિશ્વાસ, એટલે વચનામૃત વાંચવાથી તૃપ્તિ થતી. ૧૯૪૨માં (સ્વતંત્રતાની ચળવળમાં હિંદ છોડો આંદોલનમાં) જેલમાં ગયો ત્યારે પૂજ્ય સ્વામીશ્રીને મળીને ગયેલો. સ્વામીશ્રીએ તે વખતે કહેલું કે તમે જાઓ, અમે તમારી સાથે જ છીએ. ત્યારથી નિયમો શરૂ કર્યા તે આજ સુધી ચાલે છે. જેલમાં માંદગી વખતે સત્સંગિજીવન વાંચી ગયો. શિક્ષાપત્રી, વચનામૃત, સ્વામીની વાતોમાં જે લખ્યું છે તે બધાં શાસ્ત્રોનો સાર અને નિચોડ છે, એમ મને લાગ્યું. ગૂઢમાં ગૂઢ વાત પણ એમાં સરળ રીતે દર્શાવી છે. ચારિત્ર્ય મોટી વસ્તુ છે. એના ઉપર ઘણો ભાર શ્રીજીએ મૂક્યો છે.

લગભગ છેલ્લાં સોએક વર્ષથી લોકોને ધર્મ ઉપર લાગણી ઓછી થતી જણાઈ છે. સાધુઓ ખાવા-પીવામાં જ મસ્ત હોય છે. એમાં પડવા જેવું નથી એવી માન્યતા. ભણેલાઓની ધર્મ તરફ ગ્લાનિ, લોકસેવા એ જ ધર્મ - એવી સામાન્ય માન્યતા પ્રવર્તતી હતી. એ સ્થિતિમાં મેં અહીં સદાચાર ઉપર શબ્દે શબ્દે ભાર મૂકેલો જોયો. સત્સંગીઓમાં સાદાઈ, એકબીજા પ્રત્યે પ્રેમ જોયાં. શ્રીજીમહારાજે નીચલા વર્ગની જાતિને સુધારી ઉપર આણી. હું પણ

મજૂરવર્ગની ચળવળમાં રસ લેતો એટલે એ વાત મને ખૂબ ગમતી. શ્રીજીમહારાજે ૫૦૦ પરમહંસો ભેગા કર્યા, મોટા મોટા વિદ્વાનોને પોતાના તરફ ખેંચી લેતા. તેમનામાં રહેલી અસાધારણ શક્તિથી લોકો મુમુક્ષુઓ ખેંચાઈ જતા. મહારાજ અસત્ય બોલે જ નહીં. માટે મને લાગ્યું કે એ કહે તેમ માનવું અગર ફેંકી દેવું. તે બે સિવાય વચલો માર્ગ મારે માટે હોઈ શકે નહીં. વચનામૃતનાં ઉપદેશ, વચન અન્ય અધ્યાત્મ પુસ્તકોના ઉપદેશ કરતાં ઊંચામાં ઊંચી કોટિનાં છે. મહારાજે પોતા માટે જે કહ્યું છે તે બરાબર છે, તે નક્કી કર્યું. બે, ચાર, દસ ઠેકાણે મહારાજે પોતા માટે સ્પષ્ટ રીતે કહી દીધું છે કે પોતે સર્વ અવતારના અવતારી પૂર્ણ પુરુષોત્તમ છે.

પૂજ્ય શાસ્ત્રીજી મહારાજમાં અજબ આકર્ષણ-શક્તિ અને પ્રેમ હતાં. મારામાં રજોગુણ પ્રધાન. કંઈ કામ ન થાય તો ચિંતા રહ્યા કરે. સ્વભાવ મુકાય નહીં. પણ સ્વાર્થ મૂકીને સ્વતંત્રતાની ચળવળમાં જોડાયો. ક્યારેક અહંકારમાંથી ક્રોધ, ઈર્ષા વગેરે થાય તે લઈને સ્વામીજી પાસે આવીને બેસું. મને તેઓ પારખી જાય. બીજાને વાત કરતા હોય પણ મારા મનનું સમાધાન કરવા માટે જ જાણે વાત ન કરતા હોય તેમ મને લાગતું. આપણને જોઈને જ અંતર્યામીરૂપે કેમેરાની માફક આપણા મનના વિચારો ઝડપી લઈ વાતો કરે તેમ સ્પષ્ટ જણાય. તેથી શાંતિ શાંતિ થઈ જાય. સ્વામીશ્રી પૂરેપૂરા અંતર્યામી અને સર્વજ્ઞ છે તેવો અનુભવ મને અસંખ્યવાર અને કાયમ થયો હતો. બધા હરિભક્તો આવે ત્યારે હાર, ફળફળાદિ લાવે અને હું તો ખાલી હાથે આવું. એ સંબંધી મનમાં વિચાર થયો કે એમણે એ વિચાર પકડી પાડી વાત કરી કે લોકો હાર, પ્રસાદ વગેરે લાવે પણ મનમાં રુચિ, પ્રેમ હોય તે જ ખરું. જેથી મારા મનના સંકલ્પનો જવાબ મળી ગયો.

એક વખત રઢુમાં સ્વામીશ્રી પાસે હું બેઠેલો. તે વખતે સ્વામીશ્રી પૂજા કરતા હતા. તેમની પૂજામાં એક કપડું હતું. સ્વામીશ્રી કહે કે આ મહારાજની પાઘમાંનો પ્રસાદીનો કટકો છે. ત્યારે મને વિચાર થયો કે આ મહામૂલી પ્રસાદીના કટકામાંથી જરા જેટલો મને સ્વામી આપે તો ? પછી તરત જ બીજો વિચાર થયો કે મારા કરતાં વધારે સેવાભાવી અને તેને લાયક બીજા છે, માટે મારે શા માટે તે લેવા વિચાર કરવો ? એમ કરી મનનું સમાધાન કર્યું. ત્યાં તો સ્વામીશ્રીએ અંતર્યામીરૂપે મારા મનની વાત જાણી સાધુને 'કેંચી' લાવવા કહ્યું. સાધુએ કાતર આણી આપી. કાતરથી થોડો ટુકડો મને કાપી આપ્યો. આ રીતે સ્વામીશ્રીએ અંતર્યામીપણે ખૂબ સુખ આપેલું.

હું ધ્યાન કરવા બેસું પણ મહારાજની મૂર્તિનું ધ્યાન થતું નહીં, શાસ્ત્રી મહારાજનું થતું. જેલની અંદર મારી શારીરિક ઘણી વિકટ પરિસ્થિતિમાં એમની સ્મૃતિથી મારી રક્ષા થતી એમ હું અનુભવતો.

(૧૯૪૨ની સ્વતંત્રતાની ચળવળ દરમ્યાન) જેલમાંથી પાછા આવ્યા બાદ તેમને સીધો જ મળવા અટલાદરા ગયો. ત્યાં ન મળ્યા એટલે સાંકરદા જવા નીકળ્યો ત્યારે રસ્તામાં જ રણોલી સ્ટેશને તેઓનો ભેટો થઈ ગયો. મેં કહ્યું કે મારે હવે પાછું ઘેર જવું નથી. મને તેમણે ખૂબ સમજાવી આશ્વાસન આપી ઘેર જવા આજ્ઞા આપી જણાવ્યું કે અમે તમારી સાથે જ છીએ.

શ્રીજીમહારાજે લખ્યું છે કે બ્રહ્મરૂપ થયા સિવાય અક્ષરધામની પ્રાપ્તિ થતી જ નથી. નિર્વાસનિક થયા સિવાય પુરુષોત્તમની સેવામાં રહેવાતું નથી. સત્સંગમાં જે છે તેમનું બધાનું કલ્યાણ તો છે જ. બીજ વાવ્યું છે તે ઊગશે. આ ને આ જન્મે જો બ્રહ્મરૂપ થવા ધારીએ તો થઈ શકાય તેમ છે કારણ આપણને એવા મહાપુરુષ મળ્યા છે. પણ ગાફલાઈમાં રહીએ તો લંબાય. એક જન્મે બ્રહ્મરૂપ થવા સગવડ હોય તો શા માટે તે લાભ ન લેવો ? સગવડ ન હોય તેને માટે વાત જુદી છે. પૂજ્ય શાસ્ત્રીજી મહારાજ, પૂજ્ય યોગીજી મહારાજ સર્વ ખામી ટાળે એવા છે, ત્યારે આપણે પ્રયત્ન ન કરીએ તો બેવકૂફી ગણાય.

રોજબરોજ લોભ, અદેખાઈ, અહંકાર વગેરે જે ચીજો નડે છે તે દેખાય છે. પણ કોઈ શક્તિ તેમાંથી બહાર કાઢે છે, આગળ લઈ જાય છે. આપણને આમ સ્વચ્છ કરે ત્યારે લાગે કે કોઈ શક્તિ કાર્ય કરી રહી છે. પૂજ્ય શાસ્ત્રીજી મહારાજથી આપણું આ કામ થઈ રહ્યું છે. આપણે આગળ વધી રહ્યા છીએ એ તો મારો પોતાનો જાત અનુભવ છે.

સ્વામીશ્રીના પ્રસંગમાં આવતો ગયો તેમ કુદરતી રીતે જ અંગ બદલાઈ ગયું. કોણ જાણે ક્યારે તે થયું ? ને કેમ થયું ? તેની આજે પણ કંઈ સમજ પડતી નથી.

સને ૧૯૩૮માં હું મુંબઈ રાજ્યના પ્રધાનમંડળમાં પાર્લામેન્ટરી સેક્રેટરી હતો. મરીનડ્રાઇવ પાસે રહેતો હતો. તે અરસામાં મારાં માતુશ્રી લાહોરમાં ગુજરી ગયાં તેથી હું લાહોર ગયો હતો અને ત્યાંથી પાછો આવ્યો ત્યારે સ્વામીશ્રી મુંબઈ પધાર્યા હતા. મારે ઘેર પધાર્યા અને ગલીમાં જતાં મારો હાથ પકડ્યો અને એકદમ બોલ્યા કે, 'તમારાં માતુશ્રીની સારી ગતિ થઈ છે.' સ્વામીશ્રીના આ શબ્દો સાંભળી મને ખૂબ જ શાંતિ થઈ. મજૂર પ્રવૃત્તિમાં કે બીજી બાબતોમાં મન ગૂંચવાયેલ હોય અને તે વખતે તેમને મળવા જતો ત્યારે તરત કહી દેતા કે, 'તમારા મનમાં શાંતિ નથી.' તેઓ બધું સમજી જઈ પ્રેરણા દેતા હોય તેમ આશીર્વાદ આપતા.

મુંબઈ રાજ્યમાં હું મજૂર પ્રધાન હતો ત્યારે સ્વામીશ્રી અઢી માસ મારે ત્યાં મારી વિનંતીથી રહ્યા હતા. સ્વામીશ્રીને તે વખતે બીમારી હતી. ડૉ. ગિલ્ડર સાહેબના ક્લિનિકમાં સ્વામીશ્રીને લઈ જઈ સ્ક્રીનિંગ કરાવ્યું, ત્યારે ડૉ. ગિલ્ડર સાહેબે કહ્યું કે 'હૃદયમાં ટ્યુમરની ગાંઠ છે.' આથી મને ખૂબ ચિંતા થઈ, અંતરમાં દુઃખ પણ થયું. બીજે દિવસે વિશેષ તપાસ માટે ફરી ડૉ. ગિલ્ડરના ક્લિનિકમાં ગયા. ફરી જોયું તો ટ્યુમરની ગાંઠ દેખાતી જ ન હતી. આથી અમને સૌને ખૂબ આશ્ચર્ય થયું. આનંદ પણ થયો, પરંતુ ગિલ્ડર સાહેબે સ્વામીશ્રી સંપૂર્ણ આરામ લે તેવી ભલામણ કરી હતી. આથી મારા બંગલામાં તેઓ આરામ કરતા. આથી તેમનાં દર્શન અને સમાગમનું સુખ સારું મળતું.

તે અરસામાં એક વખત સ્વામીશ્રીએ મને કહ્યું, 'તમને અમારે દિલ્હી મોકલવા છે અને તમારા દ્વારા ઘણાં કામ મહારાજ કરાવશે.' મેં કહ્યું, 'દિલ્હી તો એમ શી રીતે જવાય?' સ્વામીશ્રીએ ચપટી વગાડી કહ્યું, 'પ્રભુ પલમાં ચાહે સો કરે.' બીજે જ દિવસે ન્યૂ દિલ્હીથી તાર આવ્યો કે, 'પ્લાનિંગ કમિશનના ડેપ્યુટી ચેરમેન તરીકેની મારી નિમણૂક થઈ છે.'

સ્વામીશ્રીને તાર બતાવ્યો. સ્વામીશ્રી બહુજ રાજી થયા અને કહ્યું, 'મહારાજની ઇચ્છાથી થયું છે માટે ખુશીથી જાઓ.'

આ પ્રસંગની અગાઉ જ્યારે શ્રી બાલાસાહેબ ખેર સ્વામીશ્રીનાં દર્શન કરવા મારે બંગલે પધાર્યા ત્યારે પણ સ્વામીશ્રીએ મને સંબોધીને કહ્યું હતું કે,

'તમો દિલ્હી જાઓ અને સદાચારની પ્રવૃત્તિ આખા દેશમાં પ્રવર્તાવજો.' ત્યારબાદ મારા દિલ્હી જવાના પ્રસંગે સ્વામીશ્રીએ મને આશીર્વાદ આપી શ્રી અક્ષરપુરુષોત્તમ મહારાજની મૂર્તિ ભેટ આપી કહ્યું હતું કે, 'જાઓ, મહારાજ તમારી ભેગા છે.'

અટલાદરામાં સ્વામીશ્રીના મંદવાડ વખતે હું દર્શને ગયો હતો. મને ખબર નહોતી પણ અંતિમ મિલન હતું. મને સ્વામીશ્રીએ પોતાની પાસે પલંગ ઉપર બેસાર્યો. મને ભેટ્યા અને આંસુ સારતાં કહ્યું, 'હવે ફરીથી ક્યારે મળાશે ?' ગઢડાનું કામ હજુ બાકી છે. તમો દેખરેખ રાખશો.' આ મિલન છેવટનું જ હતું. તેથી ફરી વખત અત્યંત ભાવથી મળ્યા. ઘડી પાછા ચોકમાં આવ્યા. અને સાજા હોય તેમ હસતે મુખે વાતો કરવા લાગ્યા. જાણે કાંઈ જ બીમારી નથી. પછી મેં પૂછ્યું, 'મારે કાંઈ વાત પૂછવી હોય કે મનનું સમાધાન કરવું હોય તો શું કરવું ? કાંઈક રસ્તો બતાવો.' એટલે સ્વામીશ્રીએ કહ્યું, 'આ જોગી મહારાજ તમારા માટે રોજ અગિયાર માળા ફેરવશે ને તેથી તમારાં સર્વ કાર્યો નિર્વિઘ્ને પાર પડતા રહેશે.'

સ્વામીશ્રી ઘણી વાર કહેતા કે આ જોગીમહારાજ સાધુતાની મૂર્તિ છે અને સમાગમ કરવા જેવા છે. ગોંડળ જઈ તેમનો સમાગમ કરવો. આથી ગોંડળ અક્ષરમંદિરમાં દર્શને હું ગયો. અક્ષરમંદિરના સ્થાનનો પૂજ્ય જોગી મહારાજે મહિમા સમજાવ્યો હતો તે હજુ પણ સ્મૃતિમાં છે.

અટલાદરાથી સારંગપુર જતાં અમદાવાદ સ્ટેશને છેલ્લાં દર્શન થયાં. સ્વામીશ્રીની બીમારી જોઈ રડી પડાયું. ગદ્‌ગદ કંઠે પૂછ્યું ''મારે હવે કોનો સહારો?' સ્વામીશ્રીએ મારો હાથ પકડી જોગી મહારાજના હાથમાં સોંપ્યો અને કહ્યું, 'આ જોગી મહારાજ તમારી અખંડ રક્ષા કરશે.' એ અંતિમ દર્શન હતાં. ત્યારબાદ થોડા મહિના બાદ સ્વામીશ્રી ધામમાં પધાર્યા.

હવે જોગી મહારાજનાં ચરણમાં છીએ. શાસ્ત્રી મહારાજની માફક તેમની કૃપા રહે છે અને તેઓશ્રી મદદ તેમજ રક્ષા કરે છે.

(સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ, જૂન, ૧૯૫૫ તેમજ
'યજ્ઞપુરુષ સ્મૃતિગ્રંથ'માંથી સંકલિત.)

સાધુતા અને સહિષ્ણુતાના શિખર શાસ્ત્રીજી મહારાજ

ગુજરાતની વિખ્યાત શિક્ષણનગરી વલ્લભવિદ્યાનગરના સ્થાપક અને પ્રખર રાષ્ટ્રવાદી નેતા શ્રી ભાઈલાલભાઈ પટેલ(ભાઈકાકા)ની કલમે બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજના સ્વાનુભવની એક વાત...

પૂજ્ય શાસ્ત્રીમહારાજ શ્રી યજ્ઞપુરુષદાસજી સન ૧૯૦૩માં સોજિત્રા આવેલા અને ભાગવતનું પારાયણ શરૂ કરેલું. એમના પારાયણ વખતે વાત કરવાની શૈલી એટલી સુંદર હતી કે ગામના સત્સંગીઓ સિવાયના પણ ઘણા ગૃહસ્થો અમને સાંભળવા માટે આવતા હતા. પારાયણ દરરોજ સાંજના પાંચેક વાગે શરૂ થતું, અને તે લગભગ આરતીના સમય સુધી ચાલુ રહેતું. ત્યારપછી તો આરતી વગેરેનો રોજનો ક્રમ શરૂ થતો. વાળુપાણી થયા પછીથી વચનામૃત વંચાતાં. મારી ઉંમર તે વખતે ચૌદ-પંદર વર્ષની ખરી. મને પૂજ્ય શાસ્ત્રીજી મહારાજની વાતોમાં બહુ રસ પડતો. વચનામૃત વાંચ્યા પછીથી થોડીક વાતો થતી, કીર્તનો બોલાયા પછી રાત્રે લગભગ ૧૧ના સુમારે સત્સંગીઓ વીખરાતા. હું લગભગ બધા સત્સંગીઓ વીખરાતા તે વખતે મંદિરમાંથી ઊઠતો.

પૂજ્ય શાસ્ત્રી મહારાજની એક પદ્ધતિ એવી હતી કે વચનામૃત વંચાઈ ગયા પછીથી એમાં શું કહ્યું હતું તેનો સાર બોલી જવા સત્સંગીઓને કહેતા અને પછીથી એના ઉપર પોતે વિવેચન કરતા. તે વખતે મારી યાદદાસ્ત સારી હતી. એટલે હું તો આખું વચનામૃત લગભગ અક્ષરેઅક્ષર બોલી જતો. આથી શાસ્ત્રીજી મહારાજ મારા ઉપર ખૂબ જ રાજી રહેતા હતા. કીર્તનમાં તો ઘણુખરું તો પૂજ્ય નિષ્કુળાનંદ સ્વામીની ચોસઠપદીનાં ચાર પદ દરરોજ વારાફરતી બોલાતા. કોઈ વખત પ્રેમાનંદ સ્વામીએ લખેલાં શ્રીજીમહારાજનાં સામુદ્રિક લક્ષણો સાથેનાં પદ પણ બોલાતાં. અને કોઈ કોઈ વખત તો રાત્રે શ્રીજીમહારાજનાં વિરહનાં પદ જે પ્રેમાનંદ સ્વામીનાં રચેલાં છે તે બોલાતાં. આ રીતે સાંજના પાંચથી તે રાતના અગિયાર સુધી તો સતત એકધારો કાર્યક્રમ રહેતો હતો.

પૂજ્ય શાસ્ત્રી મહારાજ તો બાળ બ્રહ્મચારી હતા, બ્રહ્મચર્યનું તેજ ચમકતું હતું. જમવામાં રસોઈની બધી વાનગીઓ ભેગી કરી, તેને ચોળી નાંખી એમાં ખોબો ભરીને પાણી રેડીને જ જમતા. એમનું આ રીતનું વર્તન બીજા સાધુઓને જરા ભારે પણ પડતું.

આના મૂળમાં તો એક જ કારણ હતું અને તે ગુરુપરંપરા. શ્રીજીમહારાજ પાસે તો પાંચસો નંદ સાધુઓ હતા, પરંતુ તેમાંય ગુણાતીતાનંદ સ્વામીની પાછળ શિષ્ય પરંપરા જળવાઈ રહી હતી. પૂજ્ય ગુણાતીતાનંદ સ્વામીના મુખ્ય શિષ્યોમાં પ્રાગજી ભક્ત હતા. જાગા ભક્ત પાસે પણ પૂજ્ય યજ્ઞપુરુષદાસજી શિષ્યભાવે બેસતા હતા. આ પ્રમાણે પૂજ્ય શાસ્ત્રીજી મહારાજને ત્યાગ, વૈરાગ્ય અને તપના પાઠ ગુરુપરંપરા પ્રમાણે મળેલા હતા અને તેની સાથે ગુણાતીતાનંદ સ્વામી અક્ષર છે એ જાતની ઉપાસના પણ દૃઢ થઈ હતી. સંપ્રદાયના બીજા સાધુઓ સાથે ઝઘડાનું આ પણ એક કારણ હતું.

સન ૧૯૦૬ સુધીમાં તો શાસ્ત્રી મહારાજ તરફ પૂજ્યભાવ રાખનારાઓનું સત્સંગી મંડળ ઘણું મોટું થયું હતું. સોજિત્રામાં શ્રી ઝવેરભાઈ વિઠ્ઠલભાઈ, જીવાભાઈ વકીલ અને પ્રભુદાસ વકીલ એમના તરફ અનન્ય મમતા રાખતા હતા. તે જ પ્રમાણે આણંદમાં શ્રી કેશવલાલ પ્રાગજી અને સોખડામાં શ્રી ત્રિભોવનદાસ પણ એમના પટ્ટ શિષ્યો હતા.

મને યાદ છે તે પ્રમાણે, સન ૧૯૦૬માં સમૈયા વખતે બધા વડતાલમાં ભેગા થયા હતા. અમારું વિદ્યાર્થીઓનું મિત્રમંડળ પણ તે વખતે હાજર હતું. સાધુઓના ઉતારામાં સવારના નવ-દસના સુમારે પૂજ્ય શાસ્ત્રીજી મહારાજ વાતો કરી રહ્યા હતા. સત્સંગીઓની પણ ઠીક ઠીક સંખ્યા હતી. તે વખતે

એક સાધુએ મરચાંની ધૂણી કરી અને બધા ઉધરસ ખાવા લાગ્યા. તે વખતે શાસ્ત્રીજીને મારી નાખવાની પણ ધમકીઓ મળી હતી. આથી બધા સત્સંગીઓએ શાસ્ત્રીજી મહારાજને વડતાલ છોડવાનો ખાસ આગ્રહ કર્યો. તેથી તેઓ વડતાલથી નીકળીને સૌપ્રથમ સોજિત્રા ગયા. સોજિત્રામાં નવાં ઘરોના ચોરામાં શાસ્ત્રીજી મહારાજનો મુકામ હતો. તે વખતે તેમની સાથે શ્રી જેઠાભાઈ કોઠારી પણ વડતાલથી નીકળીને આવ્યા હતા. શ્રી જેઠાભાઈએ તે વખતે પૂજ્ય શાસ્ત્રીજી મહારાજને સાથ આપવા ભગવાં પહેરી લીધાં અને નિર્ગુણદાસજી નામ ધારણ કર્યું. આસ્તે આસ્તે બીજા અનેક ભક્તો સાધુ થયા અને એમણે ગામોમાં ફરવા માંડ્યું.

આ સમયે શ્રી શાસ્ત્રી મહારાજે કાયમનું કાંઈક સ્થાન થવું જોઈએ એમ વિચાર્યું અને એ સ્થાન બોચાસણમાં કરવું એમ ઠરાવ્યું. સન ૧૯૦૭ની સાલમાં બોચાસણના મંદિરનો પાયો નંખાયો. સન ૧૯૦૮ની સાલથી હું પૂનાની એન્જિનિયરિંગ કોલેજમાં દાખલ થયો અને પછી તો સરકારી નોકરીમાં પેઠો જેથી શાસ્ત્રી મહારાજનો પ્રત્યક્ષ પરિચય તો ઘણો ઓછો રહેતો. પણ એમના તરફથી જે સંસ્કાર મળ્યા, તે સંસ્કારની અસર જીવનભર રહી છે. ભર્તૃહરિ લખે છે :

'संतप्तायसि संस्थितस्य पयसो नामापि न श्रूयते,
मुक्ताकारतया तदेव नलिनीपत्रस्थितं राजते ।
स्वात्यां सागरशुक्तिमध्यपतितं तन्मौक्तिकं जायते,
प्रायेणाधममध्योत्तमजुषामेवं विधा वृत्तय: ॥'

તપેલા લોઢા પર પાણીનું ટીપું પડે તો એનું નામનિશાન રહેતું નથી. એ જ પાણીનું ટીપું જો કમળપત્રો ઉપર પડે તો મોતી જેવું દેખાય છે, અને એ જ ટીપું જો સ્વાતિ નક્ષત્રમાં માછલીના મોંમાં પડે તો તેનું ઉત્તમ કીમતી મોતી થાય છે. ખરી વાત તો એ છે કે માણસને કનિષ્ઠ, મધ્યમ કે ઉત્તમ, જેવા સંગ થાય છે તેવું તેનું ઘડતર થાય છે, અને તેથી જ કહ્યું છે કે 'सत्संगति: कथय किं न करोति पुंसाम्' સારો સંગ એ માણસને માટે શું કરતો નથી? દરેક રીતે એ માણસને ઊંચો લાવે છે. મારા જેવા અનેક માણસોનું ઘડતર શાસ્ત્રીજી મહારાજનાં વચનામૃતોથી થયેલું છે.

પૂજ્ય શાસ્ત્રીજી મહારાજ વૃદ્ધ ઉંમર છતાં, વલ્લભ-વિદ્યાનગરની સ્થાપના થઈ ત્યારે આવી ગયેલા. વલ્લભ-વિદ્યાનગરની યોજનાથી એમને સંતોષ થયેલો અને મુક્તમને આશીર્વાદ આપેલા. મારી છેલ્લી મુલાકાત તો મુંબઈમાં શ્રીનંદાજીના બંગલે થઈ હતી, જ્યારે તેમની તબિયત નરમ હતી, પરંતુ મોટા આનંદની વાત તો એ છે કે પૂજ્ય ગુણાતીતાનંદ સ્વામીથી ચાલી આવેલી પરંપરા હજુ ચાલે છે ! ◆